

2



मैरिज गार्डन
संचालकों की
बैठक

3



ज्ञान में वृद्धि
की जा सकती
है: डॉ. मीनाक्षी

5



विरोध के रूप
में पहचाने जाते
हैं सुधांशु त्रिवेदी

RNI-MPBIL/2011/39805

निष्पक्ष और निर्भीक साप्ताहिक

जगत प्रवाह

वर्ष : 15 अंक : 29

प्रति सोमवार, 25 नवंबर 2024

मूल्य : दो रुपये पृष्ठ : 8

**दो मुख्यमंत्री और एक
केंद्रीय मंत्री की रणनीति
भी हेमंत सोरेन के
सामने हुई फेल**

**झारखंड में इंडी गठबंधन को
मिला बहुमत, महाराष्ट्र में महायुति
ने प्रचंड जीत की दर्ज, मध्यप्रदेश में
रहा बराबर का मुकाबला**

महाराष्ट्र और झारखंड के विधानसभा चुनाव नतीजे अब पूरी तरह साफ हो चुके हैं। महाराष्ट्र में जहां महायुति ने प्रचंड जीत हासिल की है, वहीं झारखंड में हेमंत सोरेन ने अपना दम दिखा दिया है। महाराष्ट्र में जहां महायुति में कौन बनेगा मुख्यमंत्री पर माथापच्ची का आलम है, वहीं झारखंड रिजल्ट के बाद हेमंत सोरेन के दोबारा मुख्यमंत्री बनने का रास्ता साफ हो गया है। महाराष्ट्र में सीएम पद को लेकर असल लड़ाई देवेंद्र फडणवीस

और एकनाथ शिंदे के बीच है। प्रचंड जीत के बाद फडणवीस कैबिनेटव्यक्त हैं। बीजेपी नेता जहां देवेंद्र फडणवीस को सीएम बनाने की मांग कर रहे हैं, तो वहीं मौजूदा मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे भी इस पद को लेकर अड़े हुए दिख रहे हैं। महाराष्ट्र की 288 और झारखंड की 81 सीटों समेत उपचुनाव की 48 सीटों पर वोटों की गिनती पूरी हो गई। चुनाव आयोग ने झारखंड विधानसभा को सभी 81 सीटों के चुनाव परिणाम घोषित कर दिए हैं। (शेष पेज 7 पर)

कवर स्टोरी

-विजया पाठक
एडिटर

**भ्रष्टाचारी बघेल को पार्टी से बेदखल कर
दोबारा पार्टी को स्थापित करने नये चेहरे
को मौका क्यों नहीं देते राहुल गांधी?**

बघेल की नाकामयाबी का परिणाम है विदर्भ में पार्टी का सूफड़ा साफ

-विजया पाठक

कभी छत्तीसगढ़ में जनता के दिलों पर राज करने वाली कांग्रेस पार्टी का आज पतन होता दिखाई दे रहा है। इसका सबसे बड़ा कारण है कांग्रेस आलकमान की उदासीनता और पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के भ्रष्टाचार और अनाचार। पिछले पांच वर्षों में सत्ता रहते हुए जिस तरह का जनता पर अनाचार

भूपेश बघेल ने किया वैसा व्यवहार आज तक कांग्रेस के किसी भी राजनेता और मुख्यमंत्री ने नहीं किया। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस पार्टी का एक लंबा कार्यकाल रहा है। अपनी स्थापना से लेकर लगातार कुछ वर्षों तक पूर्व मुख्यमंत्री स्व. अजीत जोगी के नेतृत्व में पार्टी ने न सिर्फ अपनी एक शाख स्थापित की, बल्कि प्रदेश को विकास के पथ पर अग्रसर भी किया। लेकिन

समय के साथ वरिष्ठ नेताओं को पार्टी ने किनारे लगा दिया और बघेल जैसे नेता आज भी पुष्पित पत्तलविल होते दिखाई दे रहे हैं। एक बात जो हैरान करने वाली है वह यह कि आखिर भूपेश बघेल के पास गांधी परिवार का ऐसा कौन सा राज है कि राहुल गांधी से लेकर सोनिया और प्रियंका भी बघेल के खिलाफ कोई एक्शन लेते नहीं दिखाई दे रहे हैं। (शेष पेज 8 पर)

**क्या प्रदेश के
युवाओं को नशा बेचने
वाला बनाना चाहती है
मध्यप्रदेश सरकार?**

**मध्यप्रदेश में ड्रग्स और नशे के इस
गोरखधंधे के मुख्य कर्ताधर्ता जगदीश
देवड़ा का क्यों बचा रही सरकार?**

-विजया पाठक

देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव भ्रष्टाचार तथा नशा मुक्त प्रदेश बनाने की बात समय-समय पर करते रहे हैं। जीरो टॉलरेंस की यह नीति का वाक्य मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से हमने एक नहीं बल्कि कई बार सार्वजनिक कार्यक्रमों, बैठकों में सुनी है। लेकिन उनकी यह नीति धरातल पर कितनी

प्रभावी है उसका सबसे बड़ा उदाहरण है प्रदेश के वित्तमंत्री जगदीश देवड़ा की आजादी। लगभग डेढ़ माह पहले मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में 1800 करोड़ रुपये के एमबी ड्रग्स की बचामती हुई थी। ड्रग्स की इतनी बड़ी खेप की तैयारी यो भी राजधानी जैसे स्थान पर होना न सिर्फ अपने आप में चौंकाने वाली घटना थी बल्कि उससे कहीं ज्यादा चौंकाने वाली

बात यह थी कि उस पूरे मामले में प्रदेश के वित्तमंत्री जगदीश देवड़ा का नाम शामिल होना था। देवड़ा पर लगे सभी आरोप तथ्यात्मक रूप से सही भी थे, लेकिन प्रदेश के मुखिया डॉ. मोहन यादव और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जगदीश देवड़ा से न तो कोई सवाल-जवाब किये और न ही उनसे इस पूरे मामले पर इस्तीफा देने की बात कही। (शेष पेज 7 पर)

**रायपुर दक्षिण उपचुनाव में सुनील सोनी की बड़ी
जीत चल गया बृजमोहन अग्रवाल का जादू**

विशेष खबर

पेज 2 पर

रायपुर दक्षिण उपचुनाव में सुनील सोनी की बड़ी जीत, चल गया बृजमोहन अग्रवाल का जादू

46 हजार से अधिक वोटों से आकाश को हराया

-संवाददाता जगत प्रवाह, रायपुर।

रायपुर दक्षिण विधानसभा उपचुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने रिकॉर्ड मतों से बड़ी जीत दर्ज की है। सीधा मुकाबला भाजपा और कांग्रेस के बीच था। भाजपा के प्रत्याशी सुनील सोनी ने अपने मुख्य प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस प्रत्याशी आकाश शर्मा को बड़े अंतर से हराते हुए जीत हासिल की। इस ऐतिहासिक जीत के बाद क्षेत्र के पूर्व विधायक और वर्तमान सांसद बृजमोहन अग्रवाल, विजयी प्रत्याशी सुनील सोनी और पूर्व मंत्री राजेश मूणत ने कहा कि वोटिंग प्रतिशत कम होने के बावजूद भी भाजपा ने बड़े अंतर से रिकॉर्ड मतों के साथ जीत दर्ज की है। दक्षिण विधानसभा के पूर्व विधायक और सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि दक्षिण विधानसभा क्षेत्र की जनता, कार्यकर्ता, नेता और विशेष रूप से मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय को धन्यवाद देता हूँ। जनता ने सरकार की योजनाओं पर मुहर लगाई है। औसत देखें, तो मेरे जीत से ज्यादा अंतर है और यह भी रिकॉर्ड टूटा है।



जनता का आभार

पूर्व मंत्री रायपुर परिचय विधायक राजेश मूणत का कहना है दक्षिण के जनता के प्रति आभार है। दक्षिण विधानसभा क्षेत्र में भारतीय जनता पार्टी के बृजमोहन अग्रवाल ने जो विकास के काम किए हैं, इस उपचुनाव में जनता ने पुनः विकास के काम में वोट किया है और सुनील सोनी को अपने विधायक के रूप में चुना है। शहर को सुंदर और स्वच्छ के साथ विकसित बनाने के योजना को आगे बढ़ाते काम करेंगे। जितना प्रतिशत मतदान हुआ, उसके हिसाब से शानदार 46 हजार से अधिक वोटों से जीत हुई है। यह जनता का विश्वास है।

बृजमोहन अग्रवाल के नाम है सबसे बड़ी जीत

2023 के विधानसभा चुनाव में इस सीट पर बृजमोहन अग्रवाल ने इस सीट पर सबसे ज्यादा वोटों से जीत हासिल करने का रिकॉर्ड बनाया था। राजनीतिक जानकार कहते हैं चुनाव सुनील सोनी लड़ रहे थे लेकिन चेहरा बृजमोहन अग्रवाल ही थे। सुनील सोनी को टिकट भी उनकी वजह से ही मिली। इस चुनाव में कुल 30 उम्मीदवार मैदान में थे।

जीत पर क्या बोले मुख्यमंत्री?

रायपुर दक्षिण सीट पर बीजेपी की जीत को लेकर सौम्य विष्णुदेव साय

ने कहा कि ये डबल इंजन की जीत है। कांग्रेस को कुल उतने वोट भी नहीं मिले जितना हमारा जीत का आंकड़ा है। इस जीत के लिए मैं सभी को बधाई देता हूँ। खासतौर पर सांसद बृजमोहन अग्रवाल को। वहीं बीजेपी से जीते प्रत्याशी सुनील सोनी ने कहा कि ये जनता की जीत है। कार्यकर्ताओं की जीत है। विकास की दिशा में अब और तेजी से आगे बढ़ेंगे। बड़ी जीत के लिए जनता और कार्यकर्ताओं का आभारी हूँ।

जनता के मूड और पैटर्न को समझने में चूक हुई

2023 के विधानसभा चुनाव में भी कांग्रेस का प्रदर्शन काफी खराब रहा था. सत्ता में रहने के बावजूद उनके कई मंत्री चुनाव हार गए थे। प्रदेश की दूसरी सबसे बड़ी पार्टी होने के बावजूद कांग्रेस सत्ता में वापसी करने में कामयाब नहीं हो पाई थी। इसका असर उपचुनाव पर भी पड़ा। कांग्रेस ने मान भी लिया कि इस उपचुनाव में पार्टी से कहीं न कहीं कोई चूक जरूर हुई है। कांग्रेस के उम्मीदवार आकाश शर्मा ने कहा कि जनता के मूड और पैटर्न को समझने में चूक हुई है। लेकिन मैं जनता के बीच हमेशा उपलब्ध रहूंगा। महापौर एजाज देबर और प्रमोद दुबे के वार्ड में भी भाजपा को लीड मिली। बीजेपी में जहां जश्न का माहौल है वहीं कांग्रेस भवन में सज़ाटा है।

सूरजपुर, बलरामपुर, बलौदाबाजार, कवर्धा कांड का उपचुनाव पर नहीं पड़ा असर

जिस वक्त छत्तीसगढ़ में उपचुनाव हो रहे थे, ठीक उससे पहले पूरे प्रदेश में कांग्रेस के बड़े मुद्दे थे। इस पर उन्होंने सबाल भी उठाए लेकिन रायपुर दक्षिण में बृजमोहन अग्रवाल के नाम और भारतीय जनता पार्टी के निशान ने फिर काम कर दिया। सूरजपुर कांड, बलरामपुर कांड, बलौदाबाजार कांड, कवर्धा कांड समेत कई स्थानों पर कानून को लेकर कांग्रेस ने सबाल खड़े किए। रायपुर में लॉ एंड ऑर्डर की स्थिति बहुत खराब होने का मुद्दा उठाया, लेकिन कोई खास फर्क नहीं पड़ा। माना जा रहा था कि रायपुर दक्षिण में सुनील सोनी पहली पसंद नहीं थे। इसका कारण था कि सभी चाहते थे कि दूसरे चेहरे को मौका मिले। एक ही चेहरे को बार-बार मौका न दिया जाए। इस वजह से केदार गुप्ता, मीनल चौबे, मृत्युंजय दुबे जैसे कई नाम उम्मीदवारों में शामिल थे, लेकिन ये नाराजगी कहीं से भी बाहर नहीं आई, लेकिन बृजमोहन अग्रवाल सुनील सोनी के लिए लगे रहे। भारतीय जनता पार्टी की सरकार है। निगम और मंडलों में नियुक्तियां होनी हैं। निगम और मेयर के इलेक्शन आने वाले समय में होने वाले हैं। ऐसे में भाजपा के किसी भी सदस्य के पास किसी भी बात की अवहेलना करने का कोई कारण नहीं था।



मैरिज गार्डन संचालकों एवं डीजे संचालकों की बैठक का आयोजन

-कैलाशचंद्र जैन

जगत प्रवाह, विदिशा। दिनांक 23

नवंबर 2024 को थाना कोतवाली विदिशा प्रॉगण में विदिशा पुलिस अधीक्षक रोहित काश्यापानी के निर्देशन एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डॉ. प्रशांत चौबे के मार्गदर्शन में एसडीएम विदिशा शक्तिज शर्मा, सीएसपी विदिशा अतुल सिंह, थाना प्रभारी कोतवाली मनोज दुबे, थाना प्रभारी सिविल लाइन शाहबाज खान की उपस्थिति में नगर के सभी डीजे एवं मैरिज गार्डन संचालकों की बैठक का आयोजन किया गया,

बैठक में मध्य प्रदेश शासन की नवीन गाइडलाइन नियम एवं दिशा निर्देश से अवगत कराया गया। डीजे को निर्धारित डेसीबल का अनुपालन कराए जाने हेतु समझाईश दी गई, DJ को माननीय न्यायालय की गाइडलाइन के अनुसार समय पर बंद करने की समझाईश दी गई। मैरिज गार्डन संचालकों को पार्किंग व्यवस्था हेतु समुचित व्यवस्था करने, गार्डन में समुचित कैमरे लगाने हेतु समझाईश दी गई एवं नियमों का पालन न करने पर कार्यवाही करने की चेतावनी दी गई। (जगत फीचर्स)

नेत्र प्रत्यारोपण से एम्स भोपाल ने लौटाई दो व्यक्तियों की आँखों की रोशनी

-अर्चना शर्मा

जगत प्रवाह, भोपाल। एम्स भोपाल

के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में एम्स भोपाल में इस दीपावली, नेत्र प्रत्यारोपण के माध्यम से दो मरीजों को उनकी आँखों की खोई हुई रोशनी लौटाई गई। यह उपलब्धि एम्स भोपाल के नेत्र रोग विभाग की टीम की मेहनत और नेत्रदान के प्रति

समाज की जागरूकता का परिणाम है। प्रो. सिंह ने इस सफलता पर खुशी जताते हुए कहा, "दीपावली अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है, और इस पावन अवसर पर नेत्र ज्योति से बड़ा कोई उपहार नहीं हो सकता। दीपावली के अवसर पर जहाँ लोग अपने परिवारजनों के साथ समय बिताते हैं, वही हमारे डॉक्टरों ने अपने सपर्यण और त्याग का परिचय देते हुए इन मरीजों का नेत्र प्रत्यारोपण कर उनकी आँखों के साथ जीवन को भी रोशन किया। इन सफल सर्जरी ने यह दिखाया है कि नेत्रदान का कितना बड़ा महत्व है। मैं सभी से अनुरोध करता

हूँ कि समाज में नेत्रदान को प्रोत्साहित करें ताकि जरूरतमंदों को रोशनी मिल सके।" डॉ. प्रीति सिंह और उनकी टीम ने दीपावली के दौरान यह सफल नेत्र प्रत्यारोपण किया। पहली

मरीज, 28 वर्षीय युवती, बचपन से आँख की चोट के कारण एक आँख से देख नहीं पाती थी। दूसरे मरीज 50 वर्षीय पुरुष थे, जिनकी आँख में संक्रमण के कारण रोशनी चली गई थी। ये दोनों कई जगह इलाज के लिए गए लेकिन नेत्र प्रत्यारोपण नहीं हो सका। एम्स भोपाल में उनकी सूची बनाई गई और जैसे ही नेत्र बैंक में आँख उपलब्ध हुई, टीम ने तेजी से सभी आवश्यक प्रबंध कर उनके

प्रत्यारोपण को सफल बनाया। दोनों मरीज अब स्वस्थ हैं और उन्हें अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है। उन्होंने एम्स भोपाल और डॉक्टरों की टीम का दिल से धन्यवाद किया। यह सफलता न केवल एम्स भोपाल की उत्कृष्ट चिकित्सा सेवाओं को प्रदर्शित करती है, बल्कि नेत्रदान के महत्व पर एक महत्वपूर्ण संदेश भी देती है। (जगत फीचर्स)



छात्र-छात्राओं के विकास में सहयोग करें महाविद्यालय परिवार: विधायक पटैरिया

-अमित राजपूत

जगत प्रवाह. देवरी। दिनांक 20 नवम्बर 2024 को बृजबिहारी पटैरिया विधायक देवरी विधानसभा का महाविद्यालय में आगमन हुआ। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. ओम प्रकाश दुबे ने विधायक का फूल मालाओं से स्वागत किया। तत्पश्चात् महाविद्यालय के सभी शैक्षणिक-अशैक्षणिक स्टाफ ने क्रमशः क्षेत्रीय विधायक का आत्मीय अभिवादन किया। एनसीसी के छात्रों ने मार्च पास्ट के साथ माननीय विधायक का स्वागत किया। इस अवसर पर विधायक ने

सभी शैक्षणिक-अशैक्षणिक स्टाफ से अल्पवार्ता के दौरान कहा कि सभी सहायक प्राध्यापक छात्र-छात्राओं के विकास में अपना योगदान दें तथा उनको उचित मार्गदर्शन प्रदान करें ताकि महाविद्यालय के साथ-साथ क्षेत्र का नाम भी रोशन हो सके। इस वार्ता के दौरान प्राचार्य ने महाविद्यालय परिवार की ओर से मांगपत्र प्रस्तुत किया जिसमें स्नातकोत्तर स्तर पर इतिहास, राजनीति विज्ञान, वनस्पति विज्ञान विषय प्रारंभ कराने के साथ एक भवन की मांग भी रखी। विधायक द्वारा आश्वासित किया गया कि महाविद्यालय की जो भी

समस्याएं उसका निराकरण शीघ्र ही किया जावेगा। इस अवसर पर नगर के गणमान्य नागरिक अनिल जैन, सुधीर बजाज, रतनदीप तिवारी, भारतेन्दू (मोटू) राजपूत, महाविद्यालय परिवार से प्रो. संतोष मिश्रा, डॉ. जी.आर. चौहान, डॉ. कल्पम सिंह डुडुवे, शिवलाल अहिरवार, श्रीमती मनीषा शर्मा, डॉ. किरण ठाकुर, डॉ. आशीष जैन, डॉ. मनीषा पाण्डे, डॉ. मनोज कुमार मिश्रा, डॉ. शिवेन्द्र पाठक, डॉ. रिजवान खान एवं अधिक संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

(जगत फीचर्स)



बुद्धि जन्मजात होती है, ज्ञान में वृद्धि की जा सकती है: डॉ. मीनाक्षी यादव

-प्रमोद बरसले

जगत प्रवाह. टिहरगढ़ी। शासकीय स्नातक महाविद्यालय टिहरगढ़ी में भारतीय ज्ञान परंपरा प्रकोष्ठ के तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय सहिष्णुता दिवस के अवसर पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। प्रकोष्ठ प्रभारी मीनाक्षी यादव ने भारतीय ज्ञान परंपरा को स्पष्ट करते हुए प्रकोष्ठ की स्थापना की महत्ता और गतिविधियों से अवगत कराया। युवा उत्सव प्रभारी सुरभि चौर ने पुरातन भारतीय ज्ञान परंपरा में मौजूद विज्ञान को अवधारणाओं के प्रमाण बताए। विज्ञान प्रभारी डॉ. सुनील कुमार बौरसी ने भारतीय आनुवंशिकता को आधुनिक विज्ञान से जोड़ते हुए पुरातन ग्रंथों में वर्णित पद्धतियों और औषधियों को बताया। डॉ.संजीत सोनी

ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा बहुत ही समृद्ध और विशाल रही है। जिसने पूरे विश्व को राह प्रदान की है। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ.मुकेश तिवारी ने कालिदास की रचना मेघदूत का उल्लेख करते हुए आधुनिक विज्ञान के आधार तरंगों के जाल की मुख्य अवधारणा को उससे जोड़ते हुए सरल शब्दों में विद्यार्थियों को समझाया। मुख्य विषय सहिष्णुता को उन्होंने भारत की राष्ट्रियता का मुख्य तत्व बताया। उन्होंने सहिष्णुता को स्पष्ट करते हुए बताया कि अपने विरोधियों के विचारों का सम्मान करना, उन्हें सुनने-समझने की ताकत रखना और यदि उनका पक्ष तार्किक या सही है तो उसे स्वीकार करना सहिष्णुता है। ग्रंथपाल कल्पना अग्रवाल ने विद्यार्थियों को

पुस्तकालय की पुस्तकों का अध्ययन कर अपने ज्ञान को बढ़ाने की बात कही। प्रभारी प्राचार्य डॉ. संजय कुमार पटवा ने भारतीय संस्कृति की महत्ता को बताते हुए सहिष्णुता पर चलने वाला सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश बताया।

विद्यार्थियों को विभिन्न गतिविधियों में प्रमाण पत्र और स्मृति चिन्ह प्रदान किए गए। मुख्य वक्ता को महाविद्यालय परिवार की ओर से स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया। कार्यक्रम का आभार डॉ. सादिया पटेल ने व्यक्त किया। संचालन दीपक मालाकार ने किया। इस दौरान डॉ. महेन्द्र सिंह तड़वाल, धर्मेन्द्र जगप, डॉ. श्रीकांत गंगवार, फंकज रहाणे, अभिषेक नागपुरे एवं विद्यार्थी मौजूद रहे। (जगत फीचर्स)

संभागायुक्त ने फोटो निर्वाचन नामावली के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण की प्रगति की समीक्षा की

-नरेन्द्र दीक्षित

जगत प्रवाह. नर्मदापुरम। संभागायुक्त के.जी. तिवारी ने 1 जनवरी 2025 के अर्हता तिथि के आधार पर फोटो निर्वाचन नामावली का विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण 2025 के कार्यक्रम की प्रगति की समीक्षा की। संभागायुक्त ने नए मतदाताओं के नाम विशेष तौर पर युवा मतदाताओं के नाम मतदाता सूची से जुड़वाने के लिए स्वीप की गतिविधियां तेज करने के निर्देश दिए। संभागायुक्त ने कहा कि महिलाएं एवं युवा तथा वे मतदाता जो 18 वर्ष

के हो चुके हैं या किसी कारणवश जिनका नाम मतदाता सूची से जुड़ने से वंचित रह गया है। ऐसे नए मतदाताओं का नाम प्राथमिकता से मतदाता सूची में जोड़े जाएं। उल्लेखनीय है कि नर्मदापुरम संभागायुक्त केजी तिवारी को जिले के लिए रोल आऊवर्क नियुक्त किया गया है। बैठक में भारतीय जनता पार्टी से मनोहर बडानी, कांग्रेस पार्टी के प्रतिनिधि अनोखेलाल राजोरिया, बहुजन समाज पार्टी से रामबाबू बरुआ, बहुजन समाज पार्टी से रतनलाल बकोरिया एवं आम आदमी पार्टी से राजेंद्र मालवीय उपस्थित थे। संभागायुक्त ने बैठक में राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों से अनुरोध किया कि वह मतदान केन्द्र के लिए अपनी अपनी पार्टी से बूथ लेवल एजेंट के माध्यम से प्राप्त किया जा रहे दावे आपत्ति के संबंध में जानकारी लेते रहे। संभागायुक्त ने कलेक्टर को निर्देश दिये कि रिमोट परिया में बीएलओ घर-घर जाकर मतदाता सूची का सर्वे करें जो नाम छूट गए हैं उन्हें प्राथमिकता से जोड़ें। जो मतदाता मृत या स्थानांतरित हो गए हैं उनके नाम हटाने की कार्यवाही की जाए। विवाह होकर दूसरी जगह से आई हुई वधुओं के नाम भी नए पते के साथ जोड़े जाएं एवं पता भी त्रुटि रहित करने के निर्देश दिए।बैठक में नेशनल लेवल मास्टर ट्रेनर फंकज दुबे ने

बताया कि एकीकृत प्रारूप मतदाता सूची का प्रारूप प्रकाशन 29 अक्टूबर 2024 को किया जा चुका है। दावा एवं आपत्ति दर्ज करने की अवधि 29 अक्टूबर से 28 नवंबर 2024 तक निर्धारित की गई है। इस दौरान मतदाता सूची से प्राथमिकता से नाम जोड़ने के लिए विशेष शिविर भी आयोजित किये जा चुके हैं। दावा एवं आपत्ति का निराकरण 24 दिसंबर 2024 तक किया जाएगा तथा नामावली के हेल्थ पैरामीटर को जांचना और अंतिम प्रकाशन के लिए आयोग की अनुमति प्राप्त करने की

तिथि 1 जनवरी 2025 निर्धारित की गई है, तथा निर्वाचन नामावली का अंतिम प्रकाशन 6 जनवरी 2025 को किया जाएगा। बताया गया कि प्रारूप 6 में केवल नवीन मतदाताओं के नाम जोड़े जाएंगे इस हेतु मतदाताओं को प्रारूप 6 बीएलओ के माध्यम से आवेदन करना होगा।

प्रारूप सात में पूर्व से दर्ज किसी अन्य मतदाता के नाम को हटाने किसी अन्य मतदाता के नाम हटाने हेतु आपत्ति प्रस्तुत करने एवं स्वयं के नाम को विलोपित करने हेतु आवेदन किए जाएंगे। वहीं प्रारूप 8 में मतदाता अपने निवास का पता स्थानांतरित करने, नामावली की प्रविष्टियों के सुधार एवं बिना संशोधन के नवीन मतदाता परिचय पत्र प्राप्त करना तथा दिव्यांग मतदाताओं के रूप में चिन्हंकन हेतु भरे जाएंगे।बताया गया कि जिले में कुल मतदाताओं की संख्या 9 लाख 48 हजार 29 है वहीं पीडब्ल्यूडी मतदाताओं की संख्या 9 हजार 337 है। कुल 1187 मतदान केन्द्र हैं। बैठक में कलेक्टर सोनिया मोना, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकार सौजन सिंह रावत, अपर कलेक्टर डीके सिंह, उपायुक्त राजस्व गणेश जायसवाल निर्वाचन सुपरवाइजर श्री कैलाश दुबे सहित संबंधित अधिकारी गण उपस्थित थे।

(जगत फीचर्स)

खुशी में युवक ने की फायरिंग

-सत्यनारायण सेन

जगत प्रवाह. शाजपुर। थार ROXX खरीदने के बाद एक व्यक्ति ने खुशी में हवा में गोली चला दी, जिसका वीडियो वायरल हो गया। सोशल मीडिया पर लोग इस घटना की आलोचना कर रहे हैं और पुलिस से कड़ी कार्रवाई की मांग कर रहे हैं। बताया जा रहा है कि वीडियो में एक युवक थार गाड़ी लेने की खुशी में हवाई फायर करता दिख रहा है। पड़ताल की तो पता चला कि वीडियो शाजापुर जिले के शुजालपुर स्थित मींद्रा शोरूम का है। अधिकांश लोग युवक द्वारा किए गए हवाई फायर को गलत बता रहे हैं। लोगों का कहना है कि इस तरह से हवाई फायर करना गलत है। इससे दहशत का माहौल बनता है। शाजापुर जिले के जिस शोरूम के बाहर का यह वीडियो बताया जा रहा है, उसके संचालक का कहना है कि वह शुजालपुर से बाहर है, गत दिनों शोरूम से एक थार गाड़ी की डिलेवरी हुई थी। सारी प्रक्रिया और वाहन की पूजन होने के बाद शोरूम से बाहर निकालते वक्त युवक द्वारा फायरिंग किए जाने की जानकारी मिली है। (जगत फीचर्स)

सम्पादकीय

गैस के गुबार में डूबती जा रही देश की राजधानी दिल्ली

नई दिल्ली और इसके आस-पास के क्षेत्रों में वायु प्रदूषण ने इस कदर गंभीर रूप धारण कर लिया है कि यह अब एक आपातकाल की स्थिति बन गई है। हाल ही में एक्स्यूआई का स्तर 500 पार कर जाना एक खतरनाक संकेत है। दिल्ली, जो कभी अपनी ऐतिहासिक धरोहरों और विविध संस्कृति के लिए जानी जाती थी, अब हर सर्दी में एक भयावह रूप धारण कर लेती है। प्रदूषण के कारण यह महानगर अब एक गैस चैंबर में बदल जाता है, जहाँ साँस लेना भी जान जोखिम में डालने के बराबर है। यह स्थिति हर साल दोहराई जाती है, और अब इसे "नया सामान्य" मान लिया गया है। दिल्ली की जहरीली हवा न केवल यहाँ के निवासियों के स्वास्थ्य पर हमला कर रही है, बल्कि भारतीय संविधान में निहित हमारे मौलिक अधिकारों पर भी गंभीर सवाल खड़े कर रही है। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 21 हमें जीवन का अधिकार प्रदान करता है। यह अधिकार केवल साँस लेने तक सीमित नहीं है; इसमें स्वच्छ पर्यावरण में जीने का अधिकार भी शामिल है। सुभाष कुमार बनाम बिहार राज्य (AIR 1991 SC 420) के ऐतिहासिक फैसले में भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट रूप से कहा था कि स्वच्छ और प्रदूषण-मुक्त पर्यावरण का अधिकार जीवन के अधिकार का अभिन्न हिस्सा है। लेकिन आज जब दिल्ली की हवा और पानी दोनों ही गंभीर रूप से प्रदूषित हैं, तो यह प्रश्न उठता है: क्या यह मौलिक अधिकार केवल कागज़ों तक सिमट कर रह गया है?

वर्तमान स्थिति में वायु प्रदूषण का खतरा इंसानों के लिए और अधिक गंभीर हो गया है, जो मस्तिष्क, फेफड़े, हृदय, आँखों, किडनी और त्वचा पर सीधा असर डाल सकता है। इसके कारण मरीजों की संख्या में वृद्धि होने की संभावना है। एनपीसीसीएचएच ने आम नागरिकों को सलाह दी है कि सुबह और शाम के समय खिड़कियाँ और दरवाजे बंद रखें। इन्हें खोलने की आवश्यकता हो तो दोपहर 12 से शाम 4 बजे के बीच ऐसा किया जा सकता है। प्लैस्टिक में रहने वाले लोगों को मच्छर भगाने वाली क्वाइल और

अगरबत्ती का उपयोग तुरंत बंद करने का सुझाव दिया गया है। इसके साथ ही, एनपीसीसीएचएच ने चेतावनी दी है कि इस समय हवा में पीएम 2.5 का स्तर 700 से अधिक पहुंच चुका है, जो बेहद खतरनाक है। एन-95 मास्क इस स्तर पर प्रभावी नहीं हो सकता, इसलिए एन-99 मास्क का उपयोग करना ज्यादा सुरक्षित रहेगा।

वायु प्रदूषण की यह भयावह स्थिति केवल प्राकृतिक घटनाओं का परिणाम नहीं है, बल्कि मानव-निर्मित गतिविधियों और राजनीतिक उपेक्षा का मिश्रित परिणाम है। दिल्ली और उसके आस-पास की वायु गुणवत्ता हर साल खराब से बदतर होती जा रही है, और इसके पीछे कई गहरे और आपसी जुड़े हुए कारण हैं। हर साल सर्दियों की शुरुआत के साथ, उत्तर-पश्चिम भारत के खेतों में जलती पराली दिल्ली और आसपास के क्षेत्रों को एक जहरीले गैस चैंबर में बदल देती है। पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में फसल कटाई के बाद बचे हुए अवशेषों को जलाने की प्रक्रिया एक बड़ी समस्या है। हालाँकि सरकार ने पराली प्रबंधन के लिए कुछ योजनाएँ पेश की हैं, लेकिन इनका प्रभाव सीमित है। पराली जलाने से निकलने वाले धूर में मौजूद प्रदूषक पदार्थ हवा की गुणवत्ता को गंभीर रूप से प्रभावित करते हैं। दिल्ली जैसे घना आबादी वाले क्षेत्र में बड़ी संख्या में वाहन और औद्योगिक इकाइयों संचालित होती हैं। वाहनों से निकलने वाला कार्बन डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड और सूक्ष्म कण वायु प्रदूषण को बढ़ाने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। इसके अलावा, फैक्ट्रियों और थर्मल पावर प्लांट्स से निकलने वाला प्रदूषण वायुमंडल में जहरीले तत्व जोड़ता है। दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र में बड़े पैमाने पर हो रहे निर्माण कार्य प्रदूषण का एक और बड़ा कारण है। निर्माण स्थलों से उड़ने वाली धूल और मलबा वायु गुणवत्ता को और खराब करता है। इसमें खासकर पीएम 2.5 और पीएम 10 जैसे खतरनाक कण मौजूद होते हैं, जो श्वसन और हृदय संबंधी समस्याओं का कारण बनते हैं।

सियासी गहमागहमी

मंत्री जी के लिये उलटा पड़ गया पाँसा



शोबी का कुत्ता न घर का घाट का। यह कहावत अलग-अलग संदर्भों में समय समय पर सुनने को मिलती है। लेकिन मध्यप्रदेश की राजनीति में इस कहावत का उदाहरण इस समय बन गये हैं प्रदेश के वनमंत्री रामनिवास रावत। विजयपुर विधानसभा सीट पर हुए उपचुनाव में कांग्रेस के उम्मीदवार मुकेश मल्होत्रा से हार गये। कुल मिलाकर रावत साहब को कांग्रेस छोड़ भाजपा में शामिल होना पला नहीं और स्थानीय जनता ने रावत को मुंहतोड़ जबाब दिया है। रावत की हार के बाद सभी भाजपा के बड़े नेता बगले झांक रहे हैं आखिर हार का ठीकरा किसके ऊपर फोड़ा जाये। जनता के ऊपर या फिर किसी मंत्री या फिर स्वयं प्रत्याशी रावत के ऊपर। जो भी हो, लेकिन जनता के साथ धोखा देने वाले रावत को विजयपुर की जनता ने जो सीख दी है वह दूसरे दलबदलू सियासी नेताओं के लिये एक सबक है।

कभी भी हो सकती है बघेल की गिरफ्तारी



छत्तीसगढ़ की राजनीति में भूपेश बघेल के जीवन में फिलहाल शांति दिखाई नहीं दे रही है। लंबे समय से भ्रष्टाचार और अनाचार जैसे मामलों में फंसे बघेल की जल्द ही गिरफ्तारी हो सकती है। सीबीआई सूत्रों के अनुसार दिल्ली हाईकमान से बघेल को दोबारा से इंटरगैट करने के संकेत मिल गये हैं। ऐसे में अगर बघेल पर दोबारा जांच बैठती है और उनसे पूछताछ होती है तो इस बार बघेल का बेकसूर होकर बाहर निकल पाना संभव नहीं होगा। चर्चा इस बात की भी है कि बघेल को अरविंद केजरीवाल की तरह लंबे समय तक जेल की हवा खिलाने की योजना पर कार्य किया जा रहा है। कुल मिलाकर बघेल साहब कुछ ही दिन खुले में साँस ले सकते हैं। उसके बाद तो उन्हें जेल की हवा खाना ही होगा। आखिर कांग्रेस आलाकमान भूपेश बघेल के मोहपाश में क्यों बंधी हुई है।

हपते का कार्टून



ट्वीट-ट्वीट

यह साटाचार का बेहद खतरनाक खेल है।

अडानी मोदी जी को फंड देते हैं और बदले में मोदी जी उन्हें देश की राष्ट्रीय संपत्ति सौंपते हैं। वे दोनों सबसे पहले एक दूसरे की रक्षा करते हैं।

लेकिन इसने द्रष्टागत किसे चुकानी पड़ रही है? आपको, अमम भारतीय को!
-राहुल गांधी

कावेस नेता @RahulGandhi



छिंटवाड़ा और बाहुण्डा जिलों के किसानों पर बड़े पैमाने पर अत्याचार किया जा रहा है। रबी की फसल का सीजन शुरू हो गया है और किसानों को सिंचाई के लिए पानी की जरूरत है। लेकिन एक तो किसानों को बिजली नहीं मिल रही और दूसरे जो बिजली मिलानी चाहिए वह भी ओवरलोड ट्रांसफॉर्मर के कारण मिल नहीं पा रही।

-कमलनाथ



पटेल कावेस अख्य
@OfficeOfKNath

राजवीरों की बात

राजनीतिक विश्लेषकों से लेकर सामाजिक मुद्दों के विशेषज्ञ के रूप में पहचाने जाते हैं सुधांशु त्रिवेदी

समता पाठक/जगत प्रवाह



पर्यावरण की फिक
डॉ. प्रशांत सिंह
पर्यावरणविद्

डॉ. सुधांशु त्रिवेदी एक भारतीय राजनेता हैं। वे वर्तमान में भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता एवं राज्यसभा के सदस्य हैं। इनकी पहचान विचारक, विश्लेषक और राजनीतिक सलाहकार के तौर पर भी होती है। ये देश की राष्ट्रीय नीति, राजनीतिक, सामाजिक मुद्दों और विशेष रूप से भाजपा के वैचारिक पहलुओं पर बेबाकी से राय रखते हैं। अक्टूबर 2019 में डॉ. त्रिवेदी राज्यसभा सीट के लिये उत्तरप्रदेश से निर्विरोध निर्वाचित घोषित हुए। उनके खिलाफ विरोधी दलों से भी किसी ने नामांकन नहीं किया था।

सुधांशु त्रिवेदी का जन्म, उनकी शिक्षा और उनके राजनीतिक करियर की शुरुआत लखनऊ शहर से हुई। यूपी के लखनऊ में 20 अक्टूबर 1970 को जन्मे सुधांशु त्रिवेदी ने इंजीनियरिंग की पढ़ाई की है। यूपी के मुख्यमंत्रियों और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष दोनों पदों पर रहने के दौरान राजनाथ सिंह के राजनीतिक सलाहकार रहे सुधांशु त्रिवेदी ने मैकेनिकल इंजीनियरिंग में पीएचडी की डिग्री ली हुई है। वे राजनीति में छोटी उम्र में आने वाले नेता के तौर पर जाने जाते हैं। उनके बारे में कहा जाता है कि वो सबसे कम उम्र में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के सूचना सलाहकार बने थे। इतना ही नहीं, 35 वर्ष की उम्र में किसी राष्ट्रीय राजनीतिक दल के अध्यक्ष का राजनीतिक सलाहकार बनाया गया था।

वर्ष 2014 के आम चुनाव में सुधांशु त्रिवेदी की महत्वपूर्ण भूमिका बताई जाती है। इस चुनाव के दौरान वे मीडिया और कम्युनिकेशन की मुख्य टीम का हिस्सा थे। टीम में रहते हुए उन्होंने सुषमा स्वराज, अरुण जेटली और अमित शाह के लिए प्रचार किया। वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में उन्हें राजस्थान का उत्तराधिकार दिया गया था। उत्तर प्रदेश राज्यसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी की बंपर जीत हुई। भाजपा के तेज-तरार राष्ट्रीय प्रवक्ता और राज्यसभा सांसद सुधांशु त्रिवेदी ब्राह्मण हैं। लखनऊ से ही उन्होंने राजनीति में कदम रखा। वह पीएम मोदी के भी करीबी माने जाते हैं। लोकसभा चुनाव 2019 में उन्हें राजस्थान की जिम्मेदारी दी गई थी। उनकी गिनती बड़े नेताओं में होती है।

अक्टूबर 2019 में यूपी से राज्यसभा के लिए निर्विरोध निर्वाचित हुए थे। उनकी पहचान विश्लेषक, विचारक और राजनीतिक सलाहकार के तौर पर है। मौजूदा समय में वह भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता भी हैं। विभिन्न मुद्दों पर बेबाकी से राय रखने के लिए वह जाने जाते हैं। दूसरी बार राज्यसभा में गये। राष्ट्रीय नीति, राजनीतिक, सामाजिक मुद्दों और विशेष रूप से भाजपा के वैचारिक पहलुओं पर बेबाकी से राय रखने वाले सुधांशु त्रिवेदी ने लोकसभा चुनाव 2014 में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इस दौरान वे भाजपा के मीडिया और कम्युनिकेशन की मुख्य टीम का हिस्सा थे। टीम में रहते हुए उन्होंने सुषमा स्वराज, अरुण जेटली और अमित शाह के लिए प्रचार किया।

हिमालय पर्वत श्रृंखला, जो विश्व की सबसे ऊंची चोटियों का घर है और अनगिनत नदियों का स्रोत है, न केवल भारत बल्कि संपूर्ण दक्षिण एशिया के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह क्षेत्र अपने बर्फलेपे पहाड़ों, विविध पारिस्थितिकी तंत्र और सांस्कृतिक मूल्यों के लिए जाना जाता है। हालांकि, जलवायु परिवर्तन के बढ़ते प्रभावों ने इस क्षेत्र की स्थिरता और समृद्धि को गंभीर खतरे में डाल दिया है। जलवायु परिवर्तन के हिमालय पर पड़ने वाले प्रभाव कई स्तरों पर देखे जा रहे हैं, जिनमें हिमनदों का तेजी से पिघलना, जलवायु पैटर्न में अस्थिरता, और जैव विविधता के लिए बढ़ते खतरे शामिल हैं। हिमालय की जलवायु प्रणाली में आ रहे परिवर्तन स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करते हैं कि तापमान में वृद्धि का सीधा असर इस क्षेत्र के हिमनदों पर पड़ रहा है। अध्ययन बताते हैं कि पिछले कुछ दशकों में हिमालयी हिमनदों का आकार घट रहा है। यह प्रक्रिया न केवल स्थानीय जल स्रोतों के लिए, बल्कि उन लाखों लोगों के लिए भी एक बड़ा खतरा है जो इन जल स्रोतों पर निर्भर करते हैं। जब हिमनद तेजी से पिघलते हैं, तो इससे ग्लेशियर-फेड नदियों में जल प्रवाह अस्थायी रूप से बढ़ जाता है, जो आचानक बाढ़ और भू-स्खलन जैसी आपदाओं का कारण बन सकता है। इसके विपरीत, दीर्घकालिक प्रभावों में जल प्रवाह की कमी, सूखे की संभावना, और जल संकट शामिल हैं। इसका ताजा उदाहरण पाकिस्तान में देखने को मिला है। पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वाह प्रांत के चित्राल में ग्लेशियर पिघलने के कारण वहां रहने वाले लोगों की जिनगी बदल गई है। जलवायु परिवर्तन एवं बढ़ते तापमान के कारण ग्लेशियर पिघल रहे हैं जिससे तराई में बाढ़ के कारण गांव के गांव बह गए हैं। उनके पास न उनके मकान बचे हैं और न खेती के लिए जमीन। हिमालय के पारिस्थितिकी तंत्र में पाए जाने वाले अनेक वनस्पति और जीव-जंतु भी जलवायु परिवर्तन के कारण गंभीर खतरे में हैं। बढ़ते तापमान के कारण पर्वतीय पारिस्थितिकी तंत्र में वृक्ष रेखा (tree line) ऊपर की ओर बढ़ रही है। इससे निचले क्षेत्रों में पाई जाने वाली प्रजातियों के लिए जीवन संघर्षपूर्ण हो गया है, और उच्च क्षेत्रों में निवास करने वाली प्रजातियों के लिए निवास स्थान सिक्कू रह रहा है। नतीजतन, इन प्रजातियों के क्लिप्त होने की संभावना बढ़ रही है। इसके अलावा, पारिस्थितिकी तंत्र में बदलाव से पारस्परिक संबंध, जैसे परागण और शिकार-शिकारियों के बीच की प्रक्रियाएं, बाधित हो रही हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण मानसून पैटर्न में भी अस्थिरता देखी जा रही है। अममान और अनियमित बारिश से कृषि प्रभावित हो रही है, जो कि हिमालयी क्षेत्र के निवासियों की आजीविका का प्रमुख साधन है। जब अत्यधिक बारिश होती है, तो भूमि की सतह पर अपरदन (erosion) बढ़ जाता है, जिससे मिट्टी की गुणवत्ता में गिरावट आती है और भूमि भूस्खलन जैसी घटनाएं बढ़ जाती हैं। दूसरी ओर, जब वर्षा सामान्य से कम होती है, तो इससे सूखा पड़ने की

स्थिति उत्पन्न होती है, जिससे कृषि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है और खाद्य सुरक्षा का संकट उत्पन्न होता है। बढ़ता हुआ तापमान हिमालयी जलवायु को प्रभावित करने के साथ-साथ बर्फ और हिमपात की प्रक्रिया को भी बदल रहा है। जहां पहले सर्दियों में अच्छी मात्रा में बर्फबारी होती थी, अब तापमान बढ़ने से यह प्रक्रिया प्रभावित हो रही है। यह सीधे प्रमुख नदियों उत्पन्न होती है। इन नदियों के जल स्तर में बदलाव पूरे उपमहाद्वीप में जल उपलब्धता और सिंचाई पर गहरा असर डाल सकते हैं, जो कि कृषि और आर्थिक स्थिरता के लिए एक बड़ा खतरा हो सकता है। हिमालय पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव केवल पारिस्थितिकी तक सीमित नहीं हैं; यह क्षेत्र की संस्कृति और परंपराओं को भी प्रभावित कर रहा है।

हिमालयी क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन किस प्रकार से हो रहा है और इसके प्रभावों को कैसे कम किया जा सकता है। इसके साथ ही, सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक है। हिमालयी क्षेत्रों में रहने वाले लोग जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को प्रत्यक्ष रूप से महसूस कर रहे हैं। उनके पारंपरिक ज्ञान और अनुभवों को नीतियों में शामिल करना एक प्रभावी तरीका हो सकता है, जिससे उन्हें बदलती परिस्थितियों के अनुसार तैयार किया जा सके। सरकारों को ऐसे कार्यक्रम शुरू करने चाहिए जो स्थायी कृषि पद्धतियों, जल संरक्षण उपायों, और आपदा प्रबंधन के लिए समुदायों को शिक्षित और तैयार करें। अंतरराष्ट्रीय सहयोग भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। हिमालयी क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए पड़ोसी देशों, जैसे भारत, नेपाल, भूटान और चीन, के बीच समन्वय



पारंपरिक पर्वतीय समुदायों का जीवन मौसम और पर्यावरण के चक्र पर निर्भर करता है। जब जलवायु में तेजी से परिवर्तन होता है, तो यह उनके जीवन के तरीके, खेती के मौसम, और धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों पर असर डालता है। जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए उन्हें अपने पारंपरिक ज्ञान को नई परिस्थितियों के अनुरूप ढालना पड़ रहा है, जो एक चुनौतीपूर्ण प्रक्रिया है। इन प्रभावों से निपटने के लिए आवश्यक है कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ठोस कदम उठाए जाएं। सरकारों और संगठनों को जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाले जोखिमों को व्यापक समझ विकसित करनी होगी और इसके अनुरूप नीतियों का निर्माण करना होगा। उदाहरण के लिए, जलवायु परिवर्तन की निगरानी के लिए तकनीकी साधनों का उपयोग कर सटीक और निरंतर डेटा संग्रह किया जाना चाहिए। इससे वैज्ञानिकों और नीति निर्माताओं को यह समझने में मदद मिलेगी कि

और साझेदारी जरूरी है। जलवायु परिवर्तन एक सीमा-विहीन समस्या है, और इसका समाधान केवल एकल राष्ट्रों के प्रयासों से संभव नहीं है। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिमालय के संरक्षण के लिए वैश्विक सहयोग और समर्थन प्राप्त करने के प्रयास किए जाने चाहिए। सारांश में, हिमालय पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव गंभीर और दूरगामी हैं। यह न केवल पारिस्थितिकी तंत्र को हानि पहुंचा रहा है, बल्कि क्षेत्र के निवासियों की आजीविका, स्वास्थ्य और सांस्कृतिक पहचान को भी चुनौती दे रहा है। इस मुद्दे से निपटने के लिए जागरूकता, सामुदायिक भागीदारी और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के साथ एक सतत और वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। ऐसा करने से न केवल हिमालयी क्षेत्र का संरक्षण सुनिश्चित होगा, बल्कि संपूर्ण दक्षिण एशिया की जलवायु और आर्थिक स्थिरता को दिशा में भी एक सकारात्मक कदम उठाया जा सकेगा।

महाराष्ट्र-झारखंड विधानसभा चुनाव

मुफ्त की रेवड़ियों ने सरकारों की कर दी वापसी



-प्रमोद भार्गव

देश के मतदाता लगता है, मुफ्त की रेवड़ियों के लालच में मतदान करने लगे हैं। इसी का परिणाम है कि महाराष्ट्र और झारखंड में सत्ताएं बरकरार रही हैं। 288 विधानसभा सीटों वाले राज्य महाराष्ट्र में भाजपा गठबंधन वाले महायुति ने विधानसभा

जीत हासिल की है, लेकिन बिना सहयोगियों के वह भी सरकार नहीं बना पाएगी। हालांकि भाजपा 125 से ऊपर सीटें जीतकर विधानसभा में सबसे बड़ी पार्टी होगी। चूंकि सबसे ज्यादा सीटें भाजपा की हैं, इसलिए एकनाथ शिंदे और अजीत पवार में से कोई मोलभाव करके मुख्यमंत्री बन जाए, ऐसा लगता नहीं है। अतएव लगता है एकनाथ शिंदे को मुख्यमंत्री का पद देवेंद्र फडणवीस के लिए पद छोड़ना होगा। राज्य के सबसे बड़े चुनावी रणनीतिकार माने जाने वाले शरद पवार अपने भतीजे अजीत पवार से ही मात खाकर हाथ मलते रह गए। इधर बड़ा झटका उड़व ठाकरे को लगा है। वे अपने पिता बाल ठाकरे की

पवार इस उम्मीद में प्रभावी उत्तराधिकारी तैयार नहीं कर पाए कि कहीं उनकी बेटी सुप्रिया सुले पिछड़ न जाए? उड़व ठाकरे को बड़ा झटका इसलिए लगा है, क्योंकि वे अपने पिता बाल ठाकरे की तरह प्रखर हिंदुत्व की छवि को बरकरार रखने में असफल रहे। वे और उनके पुत्र आदित्य ठाकरे उन फतवों को भी नहीं नकार पाए, जिनमें कहा गया था कि भाजपा को वोट देने वालों का हुक्का-पानी बंद कर देंगे। एक मौलवी ने तो यहां तक कह दिया कि उड़व ठाकरे की शिवसेना अब बाल ठाकरे की शिवसेना नहीं रही है। मतलब उसमें इतने बदलाव हो गए हैं कि वह मुल्ले-मौलवियों की पार्टी बन गई है। उड़व ठाकरे

बनाया। वे जितना कर सकते थे, उतना किया भी। लेकिन परिणाम शून्य रहा। दरअसल भाजपा ने यहां बांग्लादेशी मुस्लिमों की घुसपैठ के चलते सीमावर्ती जिलों में जनसांख्यिकीय घनत्व बिगड़ने की बात उठाई, परंतु यह मुद्दा समूचे झारखंड का मुद्दा नहीं बन पाया। दरअसल संथाल और उसके निकट के जिलों में घुसपैठ का प्रभाव है। परंतु उसका असर पूरे झारखंड में दिखाई नहीं देता। इसलिए भाजपा की हिंदुत्व और घुसपैठ के मुद्दे मतदाता में गहरी पैठ नहीं बना पाए।

सोनिया गांधी पुत्रमोह के चलते पुत्री प्रियंका वाड़ा को उम्मीदवार बनाने से बचती रही हैं। लेकिन अब 52 वर्ष की प्रियंका को वायनाड के उपचुनाव में उतारा गया। यह सीट राहुल गांधी ने जीती थी, जो उन्हें खाली करनी पड़ी। क्योंकि वे रायबरेली से भी चुनाव लड़े और जीते थे। अतएव उन्हें एक सीट से इस्तीफा देना पड़ा। प्रियंका ने यह पहला चुनाव 4 लाख से भी ज्यादा मतों से जीत लिया। अब एक ही परिवार के 3 सदस्य संसद में होंगे। लोकतंत्र के लिए यह सुखद नहीं है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी वंशवादी राजनीति के मुखर विरोधी रहे हैं। लेकिन प्रियंका ने जीत हासिल करके परिवारवादी राजनीति को कांग्रेस में मजबूत कर दिया है।

मध्यप्रदेश में रामनिवास रावत लोकसभा चुनाव के दौरान कांग्रेस विधायक रहते हुए भाजपा में शामिल हुए थे। उन्हें विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर रावत के विधायक रहते हुए भाजपा में इसलिए लाए थे, जिससे मुरैना लोकसभा सीट से भाजपा उम्मीदवार शिवमंगल सिंह तोमर चुनाव जीत जाएं। तोमर तो चुनाव जीत गए थे, लेकिन स्वयं के लाभ के लिए

दल-बदल करने वाले नेता को मतदाता ने चारों खाने चित्त कर दिया। प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव को भी रावत की हार बड़ा झटका है। उन्हें सिर-मुड़ाते ही ओले पड़ने की कड़ावत का सामना करना पड़ा है। उनके कार्यकाल में यह पहला उपचुनाव था, जिसमें घासन-प्रघासन की पूरी ताकत लगाने के बाद भी हार का मुंह देखना पड़ा। रावत पहली बार चुनाव लड़े थे। इसके पहले वे कांग्रेस से 6 बार चुनाव लड़ चुके हैं। अब उन्हें कांग्रेस उम्मीदवार मुकेश मल्होत्रा ने हराकर जता दिया है कि जनता दल-बदलतुओं के पक्ष में नहीं है। भाजपा कार्यकर्ता भी नहीं चाहते थे कि दलबदलतु उनकी छाती पर बैठकर दाल दलें। बुधनी सीट भी भाजपा इसलिए जीत पाई, क्योंकि वहां गृहनगर होने के कारण पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की साख का सवाल था। मतदाता ने उनकी लाज रखी और बाहरी प्रत्याशी होने के बावजूद रमाशंकर भार्गव को चुनाव जिता दिया। बहरहाल भाजपा ने एक बार फिर जता दिया है कि मतदाता में उसकी पैठ बनी रहेगी।



में स्पष्ट बहुमत हासिल कर लिया है। वहीं झारखंड में इंडिया गठबंधन ने 55 सीटें जीतकर भाजपा को बहुत पीछे धकेल दिया है। उत्तर प्रदेश में हुए 9 सीटों पर उपचुनाव में भाजपा ने 7 सीटों पर जीत हासिल करके जता दिया है कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व को जनता सम्मान के साथ स्वीकार रही है। लेकिन भाजपा को मध्यप्रदेश में बड़ा झटका लगा है। विधानसभा विजयपुर में दल-बदलकर आए भाजपा प्रत्याशी और राज्य सरकार में वन मंत्री रामनिवास रावत को मतदाता ने नकार दिया है। अन्य राज्यों में हुए उपचुनावों में भी भाजपा का अच्छा प्रदर्शन देखने में आया है।

उम्र के बाद महाराष्ट्र विधानसभा सीटों के लिहाज से सबसे बड़ा राज्य है। पिछले तीन दशक में यहां किसी भी एक दल को स्पष्ट बहुमत की सरकार बनाने का मौका नहीं मिला है। अतएव गठबंधन सरकारें ही सरकार चलाती रही हैं। इसी कारण यहां सरकारें गिराने के लिए विधायकों की तोड़-फोड़ भी देखने में आती रही हैं। शिवसेना से टूटकर भाजपा में शामिल हुए एकनाथ शिंदे भाजपा की दम पर मुख्यमंत्री बन गए थे। उन्हीं के मुख्यमंत्री रहते हुए अपने चाचा शरद पवार को झटका देकर अजीत पवार ने एनसीपी (अजीत पवार) बनाई और वे महायुति का हिस्सा बन भाजपा और एकनाथ शिंदे की शिवसेना का हिस्सा बन गए। अब यही महायुति नई सरकार बनाएगी। मुख्यमंत्री कौन होगा यह देखने वाली बात होगी। दूसरी तरफ शरद पवार के नेतृत्व वाली महाविकास अघाड़ी पार्टी थी, जो कांग्रेस और उड़व ठाकरे की शिवसेना के साथ चुनाव लड़ी। लेकिन महायुति से करारी हार का सामना करना पड़ा। यहां चुनाव इन्हीं दोनों गठबंधनों के बीच था। भाजपा को छोड़ किसी भी दल ने कुल 288 सीटों की आधी से भी ज्यादा सीटों पर चुनाव नहीं लड़ा। इसलिए तय था कि किसी एक दल की सरकार महाराष्ट्र में 30 वर्ष बाद भी बनने नहीं जा रही है। भाजपा ने अपने सहयोगियों के साथ बड़ी

विरासत को बचाने में असफल रहे हैं। महाविकास अघाड़ी को जीत की इसलिए उम्मीद थी कि क्योंकि इस गठबंधन ने लोकसभा चुनाव में अच्छा प्रदर्शन करते हुए 48 में से 30 सीटें जीत ली थीं। इस कारण महाविकास अघाड़ी गठबंधन सत्ता परिवर्तन को लेकर आशावित था। परिणाम से तो तय हो ही गया है कि महाविकास अघाड़ी की आशाओं पर पानी फिर गया है, इससे पहले एग्जिट पोल ने भी जता दिया था कि उसका जीतना मुश्किल है। दरअसल महाविकास अघाड़ी को यह झटका रिशतों का रंग, बदरंग हो जाने के कारण भी लगा है। अजीत पवार ने अपने चाचा शरद पवार से रिश्ते तोड़कर जता दिया था कि उनके नेतृत्व को बड़ी चुनौती मिल गई है और शरद पवार अपने राजनीतिक वजूद को पुनःस्थापित नहीं कर पाएंगे। परिणाम के बाद इस तथ्य की पुष्टि हो गई। शरद पवार अब महाराष्ट्र के ताकतवर मराठा नहीं रह गए हैं। अपने रिश्तेदारों और भरोसेमंदों का धोखा खाने के बाद 26 साल पहले उनके द्वारा स्थापित राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी अब हाशिए पर है। मूलतः कांग्रेसी और पसंद से वंशवादी

ने तो मौलवियों की इस कट्टर और खतरनाक मंसूबे का कोई उतर नहीं दिया, लेकिन योगी आदित्यनाथ के नारे 'बटेंगे तो कटेंगे' ने मौलवियों को उत्तर देकर मतदाताओं का मत हासिल कर लिया। उड़व अपनी हिंदुत्व की छवि को भविष्य में बहाल कर पाएंगे ऐसा अब लगता नहीं है। झारखंड में भाजपा को हेमंत सोरेन को जेल में भेजना महंगा पड़ा है। यहां घुसपैठ और ईसाईकरण के मुद्दे भी काम नहीं आए। दरअसल भाजपा के पास कोई ऐसा बड़ा चेहरा नहीं था, जो यहां के आदिवासियों को तुभा सके? भाजपा गठबंधन को उम्मीद थी कि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का आदिवासी होना, भाजपा के लिए वोट बटोर लेगा, किंतु धरातल पर ऐसा दिखाई नहीं दिया। सत्ताधारी दल की जनगणना पत्रक में अलग से धर्म का कॉलम बनाने की मांग ने हिंदुत्व के मुद्दे को फीका करने का काम किया है। भाजपा के पास झारखंड में कोई ऐसा स्वीकारने लायक चेहरा नहीं था, जिसे चुनावी कमान सौंपी जा सके? इसलिए उसने शिवराज सिंह चौहान को झारखंड का चुनाव प्रभावी

आरोपियों द्वारा बार-बार जगदीश देवड़ा का नाम लेने के बाद भी बगैर किसी ठोस कारण जांच क्यों रोक दी गई ?

(पेज 1 का शेष)

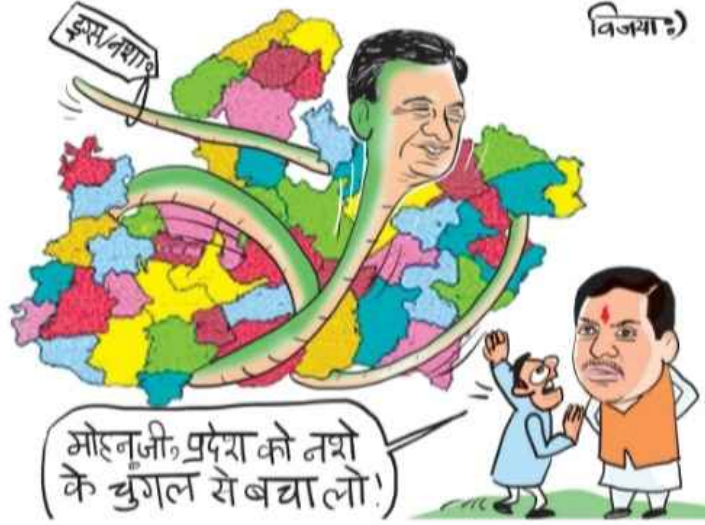
अब आलम यह है कि देवड़ा खुलेआम घूम रहे हैं और मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री मोदी ने नशे के सबसे बड़े सरगना को इसी तरह से खुला छोड़कर प्रदेश के युवाओं को भगवान भरोसे छोड़ दिया है।

देवड़ा को आखिर किसने दी वलीनचिट

जब एमडी ड्रग्स से जुड़ी यह जानकारी सामने आई तो सभी इस बात को लेकर चिंतित थे कि आखिर इतना बड़ा कारोबार चलाने वाला व्यक्ति आखिर कौन है, कौन वो लोग हैं जिनसे इन नशे के व्यापारियों को संरक्षण प्राप्त है। मामले से जब जांच अधिकाधिक ने परते उठाना शुरू की तो इसमें प्रदेश के विधायकों को हमेशा स्पेक्ट पोशाक में नजर आते हैं उनकी काली कर्तूतों ने जनता को हतप्रभ कर दिया। एक के बाद एक देवड़ा के संरक्षण में कार्य करने वाले लोगों ने उनकी कर्तूतों को सामने लाया जिसे देखकर स्पष्ट कहा जा सकता था कि इस पूरे मामले को जगदीश देवड़ा ने ही संरक्षण दिया है। ऐसे में सबाल यह उठता है कि आखिर देवड़ा को बगैर किसी जांच के वलीनचिट किसने दी है।

व्या शांति के टापू को नशे का गढ़ बनाना चाहते हैं देवड़ा ?

विधायकों जगदीश देवड़ा खुद जिस क्षेत्र से चुनाव लड़ते हैं वह मंदसौर क्षेत्र राजस्थान की सीमा से सटा हुआ क्षेत्र है। प्रदेश में सबसे अधिक अफीम, गांजा और ड्रग्स का कारोबार नीमच और मंदसौर से होता है। यही ऐसा क्षेत्र है जहां से न सिर्फ मध्यप्रदेश बल्कि पूरे देश में नशा सप्लाई किया जाता है। भाजपा के एक बरिष्ठ पदाधिकारी के अनुसार किसी भी राज्य में इतने बड़े स्तर पर नशे का कारोबार बगैर किसी राजनीतिक संरक्षण के नहीं किया जा सकता है। और यह मामला तो राजस्थान, मध्य और अन्य राज्यों से जुड़ा हुआ है। ऐसे में अगर विधायकों जगदीश देवड़ा पर नशे को संरक्षित और प्रोत्साहित करने के आरोप लगे हैं तो उन्हें इस पूरे मामले की जांच के लिये खुद आगे आना चाहिए। देवड़ा



की चुप्पी और सरकार की अनदेखी ने इस बात को स्पष्ट कर दिया है कि जगदीश देवड़ा शांति के टापू को नशे का गढ़ बनाने में कोई कोताही नहीं बरतना चाहते।

पुलिस अफसरों को जनता ने दिखाई थी एकजुटता

सूत्रों के अनुसार पिछले दिनों जब इस पूरे मामले की जांच करने के लिये पुलिस मंदसौर जिले में इस मामले के सरगना लाला को गिरफ्तार करने पहुंची तो स्थानीय लोगों ने पूरी एकजुटता के साथ लाला का समर्थन किया और पुलिस को खाली हाथ वहां से लौटना पड़ा। अंदाजा इस बात से

लगाया जा सकता है कि कितने बड़े स्तर पर प्रदेश में नशे का यह कारोबार संचालित हो रहा था। इस तरह की घटनाएं न सिर्फ शर्मनाक हैं, बल्कि घातक भी हैं। क्योंकि अगर इस कारोबार को यही नहीं रोका गया तो यह दिन दूर नहीं जब प्रदेश के युवा रोजगार देने वाला नहीं बल्कि नशा बेचने वाला बन जायेंगा।

इन राज्यों में भी सप्लाई होता था नशा

रत्नाम तथा आसपास के मंदसौर व राजस्थान के प्रतापगढ़ जिले में ड्रग्स का बड़ा कारोबार होता है। विशेषकर ड्रग प्रतापगढ़ व मंदसौर से लाकर रत्नाम के रास्ते प्रदेश के अन्य नगरों तथा गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, हरियाणा

दो मुख्यमंत्री और एक केंद्रीय मंत्री की रणनीति भी हेमंत सोरेन के सामने हुई फेल

(पेज 1 का शेष)

हेमंत सोरेन के नेतृत्व वाले चार पार्टियों के गठबंधन ने कुल 56 सीटों पर जीत दर्ज की है। वहीं मध्यप्रदेश में कांग्रेस और बीजेपी के बीच मुकबला बराबरी का रहा। दो उपचुनाव में बुधनी बीजेपी ने जीता और विजयपुर कांग्रेस ने। एक हिस्सा से देखा जाये तो यहां पर बीजेपी की हार ही हुई है। क्योंकि जिस बुधनी को बीजेपी लाखों वोटों से जीतती आ रही है वह केवल हजारों पर सिमट गई है।

महाराष्ट्र में इस तरह अघाड़ी की रणनीति फेल

योगनाओं ने दिखाया असर

महापुति की माछी लड़की बहन योजना के तरह गरीब महिलाओं के खाते में हर माह 1500 रुपय जमा किए जाते हैं। इसकी काट में विपक्षी एमबीए ने भी महिलाओं को 3,000 रुपय देने का वादा किया जिस पर जनता ने भरोसा नहीं दिखाया।

सोयाबीन नहीं बना मुदा

सोयाबीन लगभग 60-70 विधानसभा क्षेत्रों में प्रमुख नकदी फसलों में से एक है। 4892 रुपय के एमएसपी के बावजूद असंतोष को भांपते हुए विपक्ष ने एमएसपी बढ़ाकर 7000 रुपय करने का वादा किया था। जनता ने इस पर ध्यान नहीं दिया।

शिवसेना-एनसीपी से एनडीए को फायदा

शिवसेना और एनसीपी के बीच विभाजन के बाद यह पहला चुनाव था। शिदि सेना और उद्भव सेना 49 सीटों पर आमने-सामने थी। अजित और और शरद की एनसीपी 38 सीटों पर निपटी। शिदि की सेना और अजित की एनसीपी ही असली स्थावित हुईं।

मराठा आंदोलन का असर नहीं

मराठा समुदाय के लिए ओबीसी दर्ज की मांग को लेकर चले आंदोलन ने लोकसभा चुनावों में महापुति उम्मीदवारों पर प्रतिकूल प्रभाव डाला। इस बार संप-संगठन की सक्रियता ने अभाड़ी को इसका फायदा नहीं उठाने दिया।

विद्रोहियों से एनवीए को नुकसान

दलों के दो समूहों में बंट जाने से उम्मीदवारों के अंतिम चयन को लेकर असंतोष की स्थिति पैदा हो गई थी। एमबीए की विफलता में भागियों और निर्दलीयों का असर देखा जा रहा है। महापुति को इसका फायदा मिला।

भाजपा को धुवीकरण का फायदा नहीं

भाजपा ने राज्य में आदिवासी बहुल संथाल परगना क्षेत्र में कथित बांग्लादेशी घुसपैठ को बड़ा खतरा बनाने का नैरेटिव सेट किया था। जनता ने इस पर ध्यान नहीं दिया। आदिवासी बहुल संथाल परगना में धुवीकरण करने के प्रयास विफल रहे।

झारखंड में आदिवासी इंडिया गठबंधन के साथ

झारखंड में एक तिहाई से ज्यादा (28) एसटी सीटें हैं। आबादी का 26% हिस्सा आदिवासी है। 21 में आदिवासियों आबादी कम से कम एक लाख है। इन सीटों

पर झमूमो की अच्छी पकड़ है। भाजपा इसे तोड़ने में सफल नहीं रही।

पास हो गई कल्पना सोरेन हेमंत सोरेन की पत्नी कल्पना सोरेन के लिए यह चुनाव लिटमस टेस्ट था। सोरेन परिवार से चार मैदान में थे। हेमंत, कल्पना व भाई बसंत जीतने में सफल रहे। भाभी सीता सोरेन (भाजपा) हार गईं। हेमंत ने जीत का श्रेय कल्पना को दिया है।

पूर्व सीएम परिवारों का क्या हुआ

पूर्व सीएम मधु कोड़ा की पत्नी गीता कोड़ा और अर्जुन मुंडा की पत्नी मीरा हार गईं हैं। चंपई सोरेन जीतने में सफल रहे लेकिन, उनके बेटे बाबूलाल सोरेन हार गए। रघुबर दास की बहू पूर्णिमा साहू ने कांग्रेस के अजय कुमार को हरा दिया।

टडगर महतो की चल गई कैची जयराम महतो की पार्टी जेएलकेएम ने आखिरकार कैची चला ही दी। जयराम महतो को छोड़कर कोई दूसरा उम्मीदवार जीत तो नहीं दर्ज कर पाया, लेकिन इस पार्टी ने कई सीटों पर एनडीए और इंडिया गठबंधन का खेल खराब कर दिया।

आदिवासी अस्मिता का मुदा

बीजेपी ने बांग्लादेशी घुसपैठ, आबादी में बदलाव का मुदा उठाते हुए उसे आदिवासी अस्मिता से जोड़ने की कोशिश की। 'रोटी, बेंटी व माटी' का नारा दिया। बीजेपी ने संथाल परगना इलाके में कहा था कि बांग्लादेशी घुसपैठ के जरिए कहा था कि घुसपैठिए उनकी रोटी यानी रोजगार, उनकी बेंटीयों से शादी कर बेटी और उनकी जमीन यानी माटी छीन रहे हैं, लेकिन आदिवासियों ने उनके इस नैरेटिव

आदि राज्यों भेजा जाता है। रत्नाम पुलिस ड्रग्स के खिलाफ विशेष अभियान चला रही है और दो वर्षों में 200 से अधिक तस्करो तथा ड्रग परिवहन करने वालों को गिरफ्तार कर बड़ी मात्रा में डोडाचुर्, अफीम स्मैक, एमडीएमए ड्रग जब्त किया गया है। रत्नाम में दो सालों में पुलिस ने आरोपियों से 4523 क्विंटल डोडाचुर्, 08 किलो 150 ग्राम अफीम, 969 ग्राम स्मैक व 03 किलो, 410 ग्राम एमडीएमए जब्त किया है। 36 किलो 250 ग्राम गांजा तथा 196 किलो गैजे के पीपे जब्त किए हैं।

लंबे समय बाद बड़ी कार्रवाई

मंदसौर पुलिस की कार्रवाई रिकॉर्ड करियर तक ही सीमित रहती है। इसके चलते जिला बड़े तस्करो के लिए पनाहगह बना हुआ है। यहां की राजनीति में भी तस्करो काफी अंदर तक घुसे हुए हैं। इक्का-दुक्का मामले को छोड़ दें तो लंबे अरसे बाद मंदसौर जिले के बड़े तस्करो हरीश आंजना पर कार्रवाई हुई है। रात भर चली पूछताछ में हरीश आंजना ने राजस्थान के लाला का भी नाम लिया है, जो भोजाल से एमडी लाता था और बाद में हरीश व अन्य को सप्लाई करता था। स्थानीय पुलिस को इसकी भनक तक नहीं लगी। पुलिस ने जिले में लगभग 180 प्रकरण भी बनाए हैं और इनमें 300 आरोपित भी बनाए हैं, पर अधिकांश करियर ही थे। इनको औसत 05 से 10 साल तक की सजा हुई। एक भी बड़े तस्करो को सजा नहीं हुई है।

उज्जैन में दो सालों में ड्रग संबंधी 34 मामले

उज्जैन जिले में बीते दो सालों के दौरान ड्रग संबंधी 34 मामले दर्ज हुए हैं। इनमें 70 आरोपितों को गिरफ्तार किया गया है। हालांकि इनमें कोई बड़े मामले नहीं हैं। स्थानीय मादक पदार्थ तस्करो व पैडलर ही छोटी-छोटी पुड़िया बजारकर ड्रग्स बेच रहे हैं। बदमाशों ने पूछताछ में राजस्थान के प्रतापगढ़, छोटी व बड़ी सादड़ी, मंदसौर, नीमच से ही मादक पदार्थ लाया बताया है। दो सालों के दौरान कोई बड़ी सजा नहीं हुई है।

का नकार दिया। हालांकि, बीजेपी ने कोलहान के टाडगर कहे जाने वाले संथाल नेता चंपई सोरेन और सीता सोरेन को अपने खेमे में लाकर आदिवासियों को एक संदेश देने की कोशिश की थी, लेकिन बीजेपी की रघुबर दास सरकार के समय में आदिवासियों से जुड़े कानून को लेकर आदिवासी तबके में मौजूद डर-आशंका ने उन्हें बीजेपी पर भरोसा करने से कहीं न कहीं रोका। वहीं, बीजेपी ने संथाल परगना को अलग करने का शिगुम भी छोड़ा, जिसे आदिवासी तबके में नकार दिया। आदिवासियों द्वारा बीजेपी को नकारे जाने का ही असर था कि आदिवासी बहुल कोलहान-संथाल दोनों ही इलाके में बीजेपी को करारी हार देखनी पड़ी। राज्य की आदिवासियों के आरक्षित 28 सीटों में 27 सीटों पर I.N.D.I.A. गठबंधन जीता।

बीजेपी का हर वार खाली

झारखंड में बीजेपी के ज्वादातर वार खाली गए। बांग्लादेशी घुसपैठ का मुदा, जनसंख्याओं में बदलाव का मुदा, कंटेंगे तो बंटेंगे का मुदा- इससे पार्टी को नुकसान हुआ। भले ही इस कोशिश में हिंदुओं में धुवीकरण हुआ, लेकिन उसके सामने आदिवासियों और मुस्लिमों ने जिस तरह साथ दोट किया, उसने रणनीति को फल कर दिया। हालांकि, बीजेपी ने यहां बड़े पैमाने पर अपने नेताओं को उतारा। योगी से लेकर हिमंता बिस्वा सरमा, केंद्रीय मंत्री शिवाचर सिंह चौहान की रणनीति, उनके बनाए आक्रामक नैरेटिव ने झारखंड की सरल जनता को अपने भीतर सिमटने और चुपचाप अपना फैसला सुनाने पर मजबूर कर दिया। इसी का नतीजा था कि संथाल परगना में 18 सीटों में से बीजेपी सिर्फ एक सीट निकाल पाई। कभी बीजेपी का मजबूत किला रहे कोलहान में भी शहरी सीटों को छोड़ दें तो बीजेपी को खास सफलता नहीं मिली।

ऑनलाइन गेमिंग के नाम पर जुएं के जाल में फंस रहे युवा

शॉर्टकट
से नहीं
मिलती
सफलता



आज की
बात
प्रवीण
कवकड
स्वतंत्र लेखक

हम सभी मिलकर युवाओं को प्रेरित करें, माता-पिता, शिक्षक और समाज का हर सदस्य इस दायित्व को निभाए और उन्हें एक उज्ज्वल भविष्य के लिए तैयार करें।

हमारा देश आज युवाओं की उम्र से भरा हुआ है। हमारी युवा पीढ़ी नए तकनीक को अपनाने और रचनात्मक विचारों से दुनिया को बदलने की क्षमता रखती है लेकिन कुछ युवा ऑनलाइन गेमिंग के नाम पर गलत रास्ते पर जा रहे हैं। कई ऑनलाइन एप उन्हें शॉर्टकट से पैसा कमाने का लालच देकर उन्हें इस जाल में फंसाते हैं। वे पैसे लगाने लगते हैं और जुआ-सट्टा के जाल में फंसाते चले जाते हैं। याद रखें, सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता। आइए

जीवन में सफलता पाने के लिए मेहनत, अनुशासन और धैर्य अनिवार्य हैं। यह कोई नया सिद्धांत नहीं है, बल्कि सदिशों से चली आ रही सच्चाई है। फटाफट पैसा कमाने के चक्कर में युवा अपनी मेहनत को नजरअंदाज कर देते हैं और आसान रास्तों की तलाश में जुट जाते हैं। लेकिन यह रास्ता अक्सर उन्हें बर्बादी की ओर ले जाता है। गेमिंग और ऑनलाइन जुआ-सट्टा जैसी गतिविधियों में जीतने की संभावना बहुत कम होती है। अधिकतर लोग इसमें अपना पैसा गंवा देते हैं और कर्ज में डूब जाते हैं। यह न केवल उनके आर्थिक जीवन को बर्बाद करता है, बल्कि उनके मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है।

कौन नहीं चाहता एक शानदार जिंदगी

हर युवा अपने सपनों को साकार करना चाहता है। लेकिन सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं है। आजकल के युवा तेजी से सफलता पाने की चाहत में अक्सर गलत रास्ते पर चल पड़ते हैं। ऑनलाइन गेमिंग और जुआ जैसे खतरनाक जाल में फंस्कर वे अपना कीमती समय और भविष्य बर्बाद कर रहे हैं।

सफलता एक लंबी दौड़ है

मेहनत, लगन और धैर्य ही सफलता का असली मंत्र है। किसी भी क्षेत्र में सफल होने के लिए आपको उस क्षेत्र की गहराई से जानकारी होनी चाहिए। आपको छोटे-छोटे कदमों से शुरुआत करनी होगी और हर चुनौती का डटकर सामना करना होगा। मेहनत करने से न केवल आर्थिक सफलता मिलती है, बल्कि व्यक्ति का व्यक्तित्व भी विकसित होता है। मेहनत करने से हम सीखते हैं, संघर्ष करते हैं और अपनी क्षमताओं को पहचानते हैं। यह हमें आत्मविश्वास और दृढ़ता प्रदान करता है।

अपने हुनर को निखारो

किसी भी क्षेत्र में सफल होने के लिए ज्ञान आवश्यक है। हमें अपने क्षेत्र से संबंधित ज्ञान प्राप्त करने के लिए लगातार प्रयास करते रहना चाहिए। पुस्तकें पढ़ना, सेमिनार में भाग लेना और विशेषज्ञों से सलाह लेना आदि कुछ ऐसे तरीके हैं जिनके माध्यम से हम अपने हुनर को निखार सकते हैं।

लक्ष्य निर्धारण

सफलता पाने के लिए हमें पहले अपने लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए। हमें यह तय करना चाहिए कि हम जीवन में क्या हासिल करना चाहते हैं। एक बार

लक्ष्य निर्धारित हो जाने के बाद, हमें उसे प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए।

अनुशासन

सफलता के लिए अनुशासन बहुत जरूरी है। हमें अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक निश्चित समय सारणी बनानी चाहिए और उसका पालन करना चाहिए। हमें विचलित हुए बिना अपने काम पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

सकारात्मक सोच

सकारात्मक सोच सफलता की कुंजी है। हमें हमेशा सकारात्मक रहना चाहिए और अपनी क्षमताओं पर विश्वास रखना चाहिए। हमें असफलता से निराश नहीं होना चाहिए, बल्कि इससे सीखकर आगे बढ़ना चाहिए। युवाओं को चाहिए कि वे फटाफट पैसा कमाने के चक्कर में न पड़ें, बल्कि मेहनत और लगन से अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करें। उन्हें चाहिए कि वे ज्ञान अर्जन करें, अनुशासित रहें और सकारात्मक सोच रखें। सफलता रातोंरात नहीं मिलती, इसके लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। मेहनत करने वाले कभी नाकाम नहीं होते। याद रखें, मेहनत ही सफलता की कुंजी है।

भ्रष्टाचारी बघेल को पार्टी से बेदखल कर दोबारा पार्टी को स्थापित करने नये चेहरे को मौका क्यों नहीं देते राहुल गांधी?

(पेज 1 का शेष)

बात चाहे प्रदेश संचालन की हो या फिर पार्टी का नेतृत्व करने की। राज्य के नेतृत्व से लेकर पार्टी के नेतृत्व तक हर स्थान पर बघेल असफल हुए और उन्होंने सिर्फ पार्टी को नुकसान ही पहुंचाया है और आज भी नुकसान पहुंचा ही रहे हैं।

बघेल से जुड़ा हर अधिकारी हुआ गिरफ्त

भूपेश बघेल के मुख्यमंत्रीत्व कार्यकाल पर अगर नजर डालें तो छत्तीसगढ़ को अब तक इससे अधिक भ्रष्ट मुख्यमंत्री कभी कोई दूसरा नहीं मिला। बघेल ने राज्य में इतना अनाचार किया और भ्रष्टाचार का ऐसा बीज रोपा कि उसकी जड़ें भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों को भी अपने में दबीच ले गईं। फिर बात चाहे बघेल की करीबी अफसर रही सौम्या चौरसिया की हो या फिर उनके राजनीतिक सलाहकार विनोद वर्मा और आईपीएस और आईएएस अफसरों की। सभी एक के बाद एक जेल की सलाखों के पीछे गये और सभी आज भी संदेह की नजरों से देखे जा रहे हैं। इससे ज्यादा शर्म की बात एक मुख्यमंत्री और वरिष्ठ नेता के लिये क्या हो सकती है कि उनके कार्यकाल में उन्हीं के संरक्षण में हुए भ्रष्टाचार में

संलिप्त लोग आज सीबीआई और इंडो की रडार पर है और आये दिन उन्हें अपने बखान देने पुलिस थाने पहुंचना पड़ता है।

नाकामयाब बघेल ने हरवाया विदर्भ

महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के परिणामों ने न सिर्फ कांग्रेस पार्टी बल्कि कांग्रेस आलाकमान को भी आंख खोल दी। जिस भरोसे के साथ राहुल गांधी ने विदर्भ के प्रभारी के रूप में बघेल को जिम्मेदारी सौंपी थी बघेल राहुल के भरोसे पर एकदम उलट बैठे और पार्टी का विदर्भ से सुपड़ा साफ हो गया। कुल मिलकर यह कहा जा सकता है कि अगर पार्टी आलाकमान अभी नहीं संभला और बघेल को किनारे नहीं किया तो वह दिन दूर नहीं जब पार्टी का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा।

बघेल की तानाशाही समाप्त करने में असफल क्यों हैं राहुल?

राजनीतिक विश्लेषकों से लेकर प्रदेश की जनता तक हर कोई सिर्फ मन में एक ही सवाल लिये घूम रहा है कि आखिर ऐसी क्या मजबूरी है कि राहुल गांधी बघेल की तानाशाही के खिलाफ सब कुछ जानते हुए भी चुप्पी साधे हुए हैं। आखिर ऐसा क्या बघेल ने पांच वर्षों के कार्यकाल में दे दिया कि गांधी परिवार पूरी तरह मुंह में दही जमाये बैठा हुआ है। पार्टी में इतने वरिष्ठ नेता हैं, पूर्व

मुख्यमंत्री के परिवार से लेकर अन्य कई प्रमुख चेहरे हैं जिन्हें पार्टी में अगर मजबूत स्थान मिले तो वह पार्टी को नई दिशा देने में सक्षम हैं। लेकिन राहुल गांधी सिर्फ एक असफल व्यक्ति के ऊपर विश्वास जमाये बैठे हुए हैं।

80 करोड़ से ज्यादा की संपत्ति अटैच कर दी

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के कार्यालय में पदस्थ उप सचिव सौम्या चौरसिया को गिरफ्तार कर लिया। चौरसिया को राज्य में हुए कथित कोयला दुलाई घोटाले में कथित भूमिका को लेकर गिरफ्तार किया गया। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने ईडी की कार्रवाई को राजनीति से प्रेरित बताया है। दूसरी ओर मुख्य विपक्षी दल बीजेपी ने इसको लेकर बघेल सरकार को लपेटे में लिया है। बीते दो दिनों में शीर्ष महिला अधिकारियों के खिलाफ ईडी की यह दूसरी बड़ी कार्रवाई है। ईडी ने झारखंड कैडर की आईएएस अधिकारी पूजा सिंघल की 80 करोड़ से ज्यादा की संपत्ति अटैच कर दी थी।

ईडी का दावा, सौम्या के खिलाफ पर्याप्त सबूत

रिज्वी ने कहा कि ईडी ने चौरसिया की हिरासत

के लिए एक भूखंड की कथित खरीद का उल्लेख किया, जो आयरन विभाग के दायरे में आता है। चौरसिया पहले ही इस सीट के बारे में स्पष्टीकरण दे चुकी थीं। ईडी का मानना है कि भूमि खरीद के लिए इस्तेमाल किया गया भन कोयला दुलाई घोटाले से आया हो सकता है। वहीं, ईडी के वकील सौरभ कुमार पांडे ने दावा किया कि केंद्रीय एजेंसी के पास मामले में चौरसिया के खिलाफ पर्याप्त सबूत हैं। गिरफ्तारी के बाद सौम्या चौरसिया को केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के कर्मियों के पहले में स्वास्थ्य जांच के लिए ले जाया गया।

अडानी से भी करोड़ों रुपये उकार गये बघेल

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के मीडिया सलाहकार पंकज झा ने इंटरनेट मीडिया एक्स पर पोस्ट किया है कि जिस डील की बात अमेरिकन दस्तावेजों से सामने आई है, वह 2021 में कांग्रेस सरकार में हुई थी। भूपेश बघेल हमेशा की तरह सफेद झूठ बोल रहे हैं। यह कोई बड़ी बात नहीं है; वे बोलते रहे हैं। बड़ी बात यह है कि हमेशा की तरह कांग्रेस चोरी और सीनाजोरी दोनों कर रही है। यह तो अमेरिकन एजेंसी के तथ्य गलत हैं, अनेक ऐसे कारण हैं, जिससे यह कह सकते हैं कि उसके तथ्य गलत हैं।